सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविताओ में बिम्ब-विधान

पाया कानजीभाई रवजीभाई
पी एच डी शोध-छात्र
हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन

१. प्रास्ताविक

'बिम्ब' शब्द का सामान्य अर्थ 'प्रतिच्छाया', 'प्रतिकृति' इत्यादि है। हिन्दी (संस्कृत) के पारिभाषिक कोशों के अनुसार इसका अर्थ परछांही, प्रतिकृति, सूर्य या चन्द्रमा या सूर्य का मंड़ल आदि है।[1]

'बिम्ब' शब्द अंग्रेजी के 'Image' (इमेज) का पर्याय है। कला में 'बिम्ब' शब्द का अर्थ निर्जीव ओर सजीव वस्तु का प्रतिबिम्ब है।[2] मनोविज्ञान में भी 'बिम्ब' शब्द का अर्थ मानसिक पुनर्निर्माण से है। 'काव्य-बिम्ब' की परिभाषा देते हुए डॉ नगेनद्र ने लिखा है।

"काव्य-बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस-छवि है, जिसक मूल में भाव की प्रेरणा रहती है।"[3]

डॉ रामयतनसिंह 'भ्रमर' के अनुसार "कोई भी साधारण बात यदि रूपविधान के घूंघट से झांकती है, तो वह असाधारण और सुन्दर प्रतीत होने लगती है।"[4]

'दिनमान' के उप-संपादक और 'पराग' के संपादक सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ; अज्ञेय जी संपादित 'तीसरा तारसप्तक' के सातवें और अंतिम कवि हैं। 'काठ की घंटियाँ'(1959), 'बाँस का पुल'(1963), 'एक सूनी नाव'(1966), 'गर्म हवाएँ', 'कुँआनो नदी'(1973), 'जंगल का दर्द'(1976), 'खूटियों पर टँगे लोग', 'कोई मेरे साथ चले' इनकी काव्य उपलब्धियाँ हैं।

समसामयिक सामाजिक यथार्थ तथा युगीन मानव के संघर्ष, व्यक्तिगत अनुभूतियाँ, समस्याओं इत्यादि से भरा जीवन को वह स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करते हैं। इन्होंने व्यंग्यात्मक शैली अपनाई है। इनकी काव्य-भाषा में लोक-भाषा, उर्दू, अंग्रेजी के शब्द भी विद्यमान है। इनकी कविताओं में निम्न प्रकार के बिम्ब पाये जाते है।

२. प्रकृतिपरक बिम्ब

सर्वेश्वर जी ने प्रकृति संबंधित बिम्ब भी दिये है । उनकी कविताओं में प्रकृति मूर्त रूप में आयी हैं । देखें-

"प्रथम बार
इस गंवार नार के सिंगार पर
कोटर-कोटर से छिप झांकती
सखियों खिलखिला उठी
पीछे से आ पिय ने
चुपके से हाथ बढ़ा

माथे पर चांदी की बिंदियाँ चिपका दी
लज्जा से लाल मुख / हथेलियाँ में छिपा
भोर झट भागा / ओट हो गयी
माथे से छूट / गिरी बेंदी
बस पड़ी रही।"[5]

प्रकृति विषयक दूसरा बिम्ब देखें।

'आकाश का साफा बाँधकर / सूरज की चिलम खींचता
बैठा है पहाड़ / घुटनों पर पड़ी है नदी चादर-सी
पास ही दहक रही है / पलाश के जंगल की अँगीठी।'

बिम्ब की प्रकृति के आधार पर मूर्त द्वारा मूर्त की व्यंजना हुई है।

३. व्यक्तिवादी बिम्ब

वैज्ञानिक जीवन से उपमानों को संचित कर इन्होंने अनेक अभिनव प्रयोग किए हैं । लज्जा से कपोलों पर शीघ्र ही उसी प्रकार लाली दौड़ जाती है, जिस प्रकार बिजली का स्टोव तत्क्षण सुर्ख हो उठता है । 'काठ की घंटियाँ' में इसका बिम्ब देखें।

"प्यार का नाम लेते ही
बिजली के स्टोव-सी
जो एकदम सुर्ख हो जाती है।"[6]

जीवन उस सड़े कपड़े की तरह जर्जर हो गया है, जिसे जितना अधिक सँवारने का प्रयत्न किया जाता है, उसकी अवस्था उतनी ही बिगड़ती जाती है । जीवन को छिन्न-भिन्न अवस्था का बिम्ब देखें।

"कैसी विचित्र है ज़िंदगी
जैसे मैं जीता हूँ
एक सड़ा कपड़ा जो फटता जाता है
ज्यूँ-ज्यूँ सीता हूँ।"[7]

प्रिय को खोकर कवि जीवन को निरर्थक-सा अनुभव कर रहा है । जीवन के प्रति निर्लिप्त हो गये हृदय में कुछ खोने का दुःख एवम उसे पाने की चाह नहीं रह गई है । बिम्ब देखें-

"सारा असिस्तत्व रेल की पटरी-सा बिछा है
हर क्षण धड़धड़ाता हुआ निकल जाता है ।"[8]

मनुष्य अपने दुःख को माँजकर, अपनी आत्मा का परिमार्जन करता है तब वह सच्चे अर्थो में मनुष्य बन पाता है।

"दर्द जितना भी / फूट रहा हो, समेटकर,
मौजो,

ओ काठ की घँटियाँ / माँजो, बजो
ओ काठ की घँटियाँ / बजो।"[9]

४. सांप्रत (युगीन) सभ्यता एवम समाज से संबंधित बिम्ब

सांप्रत सभ्यता एवम समाज पर से कवि का विश्वास उठ गया है । उसकी नज़र में समाज धूर्त, नीच व्यकियों से भरा पड़ा है, उसमें कृत्रिमता की बोलबाला है । समाज में व्याप्त कृत्रिमता और धूर्तता पर तीखा व्यंग्य देखें।

"आस्था के नाम पर मूर्खता
विवेक के नाम पर कायरता
सफलता के नाम पर नीचता
मुहर की तरह हर व्यक्ति पर लगी हुई है ।"[10]

कवि ने पढ़े-लिखे, परंतु भीतर से खोखले आधुनकि युवा वर्ग पर भी तीक्ष्ण व्यंग्य किया है । इसका ध्वनि, अमृत और क्रियात्मक बिम्ब देखें-

"किड़-किड़-किड़ कियाँ कियाँ
किड़-किड़-किड़ कियाँ कियाँ
दरबे से निकली हैं
पढ़ी-लिखी मुर्गियाँ ।"[11]

देश में व्याप्त निर्धनता का मार्मिक एवम बिम्बात्मक चित्र कवि ने खिंचा हैं । कवि ने उन अबोध मासूमों की आँखों को अपनी कविता का विषय बनाया है, जिनके अधर ने मौन धारण किया है, किन्तु उनकी आँखे सब कुछ बतला देती हैं । इनके जीवन में आजन्म रहने वाले अभावों एवम इन पर मंड़राती हुई दुःख की काली छाया को सहज ही पढ़ा जा सकता है-

"और दूसरी ओर उनके बच्चे
जिनकी आँखें अंधेरे में जलती
मिटटी के तेल की ढिबरियों सी दिखाई देती हैं
ढिबरियाँ जो शाम को केवल घंटे भर के लिए जलती हैं ।
फिर रात भर अंधेरा छाया रहता है ।"[12]

भारतीय लोकतंत्र की विफलता पर व्यंग्यात्मक बिम्ब देखिए।

"लोकतंत्र को जूते की तरह
लाठी में लटकाए
भागे जा रहे हैं, सभी / सीना फुलाए।"[13]

स्वार्थ में आपादमस्तक दूबा आज का आम आदमी अपने को अजनबी और अकेला अनभव कर रहा है । यथा-

'अब मैं स्वयं ही अपना नहीं हूँ
जिसे तुम देखते हो / वह मेरा निर्वासित रूप है
किससे कहूँ / मेरा मस्तिक / मेरा हृदय / मेरा व्यक्तित्व
अब दूसरे गढ़ते हैं।'

५. व्यंग्यपरक बिम्ब

कवि ने बिम्बों का अच्छे ढंग से उद्घाटित करन के लिए व्यंग्य का सहारा लिया है। 'गौबरैले', 'भेड़िया' इत्यादि कविताओं में व्यंग्यपरक बिम्ब मिलता हैं । 'गौबरैले' कविता में प्रयुक्त बिम्ब निम्न है।

"पच्चीस वर्षो से लगातार
यही देखते-देखते
लगता है हम सब
गौबरैलों में बदल गये हैं।"[14]

कवि कहता है कि यहाँ तो सब कुछ गौबरैलो के अनुकूल ही हो रहा है। सभी विवश होकर मुँह फाड़े मात्र निर्जीव-सा देख रहे हैं । दृश्य, लक्षित एवम सरल बिम्ब देखें।

"अच्छे से अच्छा शब्द फूलकर
गौबरैल में बदल जाता है
और बड़े से बड़े विचार को
गंदी गोली की तरह ठेलने लगता है-
चाहे वह ईश्वर हो या लोकतंत्र
गौबरैल चढ़ रहे हैं
और हम सब
ग़लीज इश्तहारों से लगी
दीवार की तरह निर्लज्ज खड़े हैं ।"[15]

कवि ने 'भेड़िया' कविता में समाज के जुल्मी व्यक्ति पर व्यंग्य कसा है। जिस व्यक्ति मानवों पर मनचाहा अत्याचार करे वह भेड़िया है । कवि की सरल बिम्बात्मक अभिव्यक्ति देखें।

"अचानक
तुम में से ही कोई एक दिन
भेड़िया बन जायेगा
उसका वंश बढ़ ने लगेगा ।"[16]

६. लोकालयों पर आधारित कविताओं से संबंधित बिम्ब

कवि ने ग्रामीण परिवेश और प्रकृति का चित्राकन लोक-शैली में ही बड़ी सशक्तापूर्वक, बड़े सुंदर ढंग से पेश किया है । गाँव में सावन के झूले पड़ गये हैं। ग्रामीण युवती झूले पर झोंके लेती हुई गा रही है। इसका ध्वनि, अमूर्त एवम क्रियात्मक बिम्ब देखें ।

"दादुर मोर पपीहा बोले
बोले आँचल धानी रे,
खन-खन खन-खन चुरियाँ बोले
रिम झिम रिम झिम पानी रे,
डाल-डाल पर पात-पात पर कोइलिया बौराई रे ।
नीम की निबौली पक्की, सावन की ऋतु आई रे ।"[17]

७. प्रेमपरक बिम्ब

कवि को श्वेत में - खण्ड़ो में प्रेयसी की दृष्टि जलपात्र में दौड़ती मछली में उसकी मुस्कान, बेंत-कुंजों में स्वप्रियता की उन्मुक्त हँसी दिखाई देती है । जैसे,

"धन्य है तुम्हारा प्यार
एक पीला सागर-
मौन, निश्चल, अलौकिक, अपार ।
जिसमें मैं
एक भूरी किसी-सा डुब रहा हूँ ।"[18]

८. निष्कर्ष

इस प्रकार बिम्ब-निर्माण में सर्वेश्वर जी एक कुशल कवि सिद्ध होते हैं । नयी कविता को मौलिक बिम्ब प्रदान करके बिम्ब-विधान की प्रक्रिया को इन्होंने नया आयाम दिया है । इन्होंने बिम्ब संबंधी अनेक सुंदर एवम नए प्रयोग किए हैं । आस-पास के जीवन से ही उपमानों को उठाकर इन्होंने बिम्बों में आत्मीयता भर दी है, उसी प्रकार विज्ञान जगत से उपमानों को लेकर बिम्बों को युगानुरूप वैज्ञानिकता प्रदान की हैं।

संदर्भसूची

१ सत रामचंद्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश-चौथा खण्ड़, पृ-126
२ Ibid, पृ-328
३ डॉ नगेनद्र, काव्य-बिम्ब, पृ-05
४ डॉ रामयतनसिंह 'भ्रमर', आधुनिक हिन्दी कविता में चित्र-विधान, पृ-03
५ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, भोर, पृ-216
६ वही, काठ की घंटियाँ कविता से
७ वही, एक सूनी नाव, पृ-70
८ वही, एक सूनी नाव, प-08
९ वही, काठ की घंटियाँ कविता से
१० वही, एक सूनी नाव, पृ-38
११ वही, एक सूनी नाव, पृ-58
१२ वही, कुँआनो नदी, पृ-19
१३ वही, गर्म हवाए, यह खिड़की, कविता से
१४ वही, गौबरैले, कविता से
१५ वही, गौबरैले, कविता से
१६ वही, भेड़िया, कविता से
१७ वही, बाँस का पुल, पृ-33
१८ वही, वह चुंबन कविता से